53

व्याख्या, अनुमान और प्रकाश

(17:1, 8, 11, 14, 16)

प्रकाशितवाक्य के संकेतों को समझने की कोशिश करते हुए हमारा काम कई बार परमेश्वर की दी गई व्याख्या से आसान हो जाता है। यह जानना सहायक था कि सात दीवटें असिया की सात कलीसियाओं को (1:20) और अजगर, शैतान को कहा गया था (12:9)। आप चाहते होंगे कि प्रकाशितवाक्य की और व्याख्या होनी चाहिए। यदि ऐसा है तो अध्याय 17 में आपकी इच्छा पूरी हो जाती है, क्योंकि इस अध्याय में हमें पुस्तक के अन्य किसी भी भाग से अधिक व्याख्यात्मक वाक्य मिलते हैं। अफसोस की बात है कि कुछ व्याख्याओं को समझना संकेतों से अधिक कठिन है।

विलियम बार्कले ने कहा है, ''अध्याय 17 *प्रकाशितवाक्य* का एक सबसे कठिन अध्याय है।''[1] होमेर हेली ने 17: 8-11 को ''व्याख्या करने के लिए पूरी पुस्तक में शायद सबसे कठिन भाग'' कहा।[2] हेनरी स्वेट ने कहा कि यह भाग ''एक गूढ़ पहेली'' है ''जिसके एक से अधिक हल मिल सकते हैं।''[3] एडवर्ड मैक्डोवल ने लिखा है कि ''सात राजाओं'' और ''पशु जो था और जो नहीं है'' की ''पहेली [के अर्थ] का हम केवल अनुमान लगा सकते हैं।''[4]

इस बात में कि हममें से अधिकतर लोग अपोकलिप्टिक साहित्य से अपरिचित हैं (यहां तक कि हम इसे पसंद भी नहीं करते) कठिनाई हो सकती है।[5] हो सकता है कि स्वर्गदूत की बातों का पहली शताब्दी के पाठकों के लिए अधिक अर्थ हो। एक और सम्भावना है कि हम इस अध्याय को और जटिल बना सकते हैं। शायद ये आयतें रोमी शासकों पर हमारी जानकारी के लिए पहेली बनाने के लिए नहीं लिखी गई थीं। 10 से 12 आयतों में दिए हर राजा की पहचान की आवश्यकता नहीं है।

इस पाठ में हम स्वर्गदूत की व्याख्या की अलग-अलग व्याख्याओं की बात करेंगे। ऐसा करते हुए हमें अध्याय 17 से 19 के विषय वाक्य को ध्यान में रखना होगा: ''और ... सात स्वर्गदूतों ... में से एक ने आकर मुझ से यह कहा कि इधर आ, मैं तुझे उस बड़ी वेश्या का दण्ड दिखाऊं, जो बहुत से पानियों पर बैठी है'' (17:1)। अध्याय 17 का उद्देश्य प्रकाशितवाक्य लिखे जाने के समय सिंहासन पर बैठे कैसर की पहचान कराना या ''नीरो

रेडिविवुस'' मिथ्या (यह विचार कि नीरो वापस आएगा) को मसीही मोड़ देना नहीं था। यूहन्ना के पाठकों के लिए इसका लक्ष्य यह पुष्टि करना था कि रोम विनाश की ओर बढ़ रहा था और हमारे लिए यह संदेश है कि प्रभु का *हर प्रकार का* विरोध अंतत: दबा दिया जाएगा।

अध्याय 17 के बीच में से चलते हुए, आयत 1 के विषय से जुड़े रहें। यह आपको अनुमान के प्रलय में बहने से बचाए रखेगा।

स्वर्गदूत की व्याख्या (17:6-11)

हमारे पिछले पाठ में यूहन्ना ने लाल रंग के पशु पर बैठी एक भड़कीली स्त्री देखी थी। हमने निष्कर्ष निकाला था कि उस समय वह स्त्री रोम नगर था,[6] जबकि पशु रोमी साम्राज्य था।

यूहन्ना ने जब उस स्त्री को देखा तो वह बड़ा ''चकित हो गया'' (आयत 6ख)।[7] NIV में इसका अनुवाद ''मैं बड़ा दंग रह गया'' है। शायद प्रेरित दंग रह गया था, क्योंकि स्वर्गदूत की प्रतिज्ञा के आधार पर, उसने नगर को लपटों में देखने की उम्मीद की थी, परन्तु इसके बजाय उसने एक स्त्री को शक्ति के पूरे चरम पर देखा। हो सकता है वह घबरा गया हो क्योंकि उसमें शक्ति और आत्मविश्वास झलक रहा था यानी वह स्त्री अभेद्य लग रही थी।[8]

यूहन्ना की प्रतिक्रिया का कारण जो भी हो, इससे स्वर्गदूत को स्त्री और उसकी सवारी पर चर्चा करने का अवसर मिल गया: ''उस स्वर्गदूत ने ... कहा; तू क्यों चकित हुआ? मैं इस स्त्री, और उस पशु का, जिस पर वह सवार है, और जिस के सात सिर और दस सींग हैं, तुझे भेद[9] बताता हूं'' (आयत 7)। यूहन्ना की हैरानगी उस स्त्री पर थी, परन्तु स्वर्गदूत ने वेश्या *और* पशु दोनों की व्याख्या करने का प्रस्ताव रखा। स्त्री को उसके घोड़े से अलग करके नहीं समझा जा सकता था, वैसे ही जैसे चार सवारों को उनके घोड़ों से अलग करके नहीं समझा जा सकता था।

स्वर्गदूत कहने लगा:

> जो पशु तू ने देखा है, यह पहिले तो था, पर अब नहीं है,[10] और अथाह कुंड से निकलकर[11] विनाश में पड़ेगा, और पृथ्वी के रहने वाले[12] जिन के नाम जगत की उत्पत्ति के समय से[13] जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए,[14] इस पशु की यह दशा देखकर, कि पहिले था, और अब नहीं; और फिर आ जाएगा, अचंभा करेंगे (आयत 8)।

कई बार कहा जाता है कि वह पशु ''था और नहीं है,'' परन्तु अभी आने वाला था। इसके कई अर्थ हो सकते हैं। अध्याय 13 का अध्ययन करते हुए हमने संकेत दिया था कि समुद्री पशु मसीही विरोधी सरकार को दर्शाता था। हमने यह भी देखा था कि पशु में चारों पशुओं के गुण थे, जो दानिय्येल 7 वाले बाबुल के, मादा-फारसी, यूनानी और रोमी साम्राज्य का प्रतीक थे।[15] एक अर्थ में पशु ''नहीं था'' क्योंकि चार में से तीन साम्राज्य प्राचीन समय की बात थी। परन्तु एक और अर्थ में वह अभी भी था (और आगे भी रहेगा[16]) क्योंकि पंखों की प्रतीक्षा में मसीही विरोधी सरकार का ''नया और सुधरा हुआ'' संस्करण आता रहता है।[17] यूहन्ना के समय में वह पशु रोमी साम्राज्य था, परन्तु रोमी साम्राज्य के विनाश से पशु के अंत का संकेत नहीं मिला। शैतान के राजनैतिक साथी आज भी हैं।

आयत 8 के एक और सम्भावित अर्थ की व्याख्या ''पृथ्वी के रहने वाले ... अचम्भा करेंगे'' शब्दों में मिलता है। अध्याय 13 में समुद्री पशु का विवरण देते हुए यूहन्ना ने कहा, ''और मैंने उसके सिरों में से एक पर ऐसा भारी घाव लगा देखा, मानो वह मरने पर है; ... और सारी पृथ्वी के लोग ... अचम्भा करते हुए चले'' (आयत 3)। मूल पवित्र शास्त्र में, अनुवादित शब्द ''अचम्भा'' वही मूल शब्द है, जिसका अनुवाद 17:8 में ''अचम्भा'' किया गया है। पशु के घाव के ठीक होने का अध्ययन करते हुए हमने ध्यान दिया था कि कई लोग यह मानते हैं कि यह ''नीरो रेडिविवुस'' दंत कथा से जुड़ा है। यानी यह कि नीरो एक दिन रोम नगर पर बदला चुकाने के लिए अपनी सेना के साथ वापस आएगा।[18] इस विचार के साथ, नीरो मसीहियत का विरोध करने वाला दिखाई दिया है: वह ''था'' (जीवित रहा) और ''नहीं है'' (मर गया), परन्तु ''आने वाला है'' (डोमिशियन के रूप में, जिसने नीरो द्वारा आरम्भ किए गए सताव को जारी रखा और उससे भी अधिक कर दिया)।

13:3 पर चर्चा करते हुए, ''नीरो रेडिविवुस'' मिथ्या की व्याख्या करने के बाद मैंने प्रस्ताव रखा था कि ये आयतें रोमी साम्राज्य की अद्‌भुत बलवर्धक शक्तियां हो सकती हैं। नीरो की मृत्यु पर, साम्राज्य अव्यवस्था में डाल दिया गया था (जिसमें एक साल में तीन ''राजा'' हुए); परन्तु वेस्पेसियन के सिंहासन पर बैठने के बाद, राज्य में व्यवस्था लौट आई और फिर से यह पहले से भी अधिक शान में आ गया।[19] शायद ''था पर अब नहीं है और फिर आ जाएगा'' वाक्यांश शायद पूरे का पूरा लिया जाना चाहिए और आत्मा ने इसे केवल यह संकेत देने के लिए देना चाहा कि पशु (रोमी साम्राज्य का प्रतीक) का नाश करना कठिन था। यह स्पष्ट अनश्वरता सफलता की पूजा करने वालों के लिए हमेशा आश्चर्य रही है।

पशु के ''था, पर अब नहीं है और फिर आ जाएगा'' के रूप में व्याख्या के कारण कि एक और संभावना है: प्रकाशितवाक्य में प्रभु को ''जो है, और जो था, और जो आने वाला है'' (1:4; देखें 1:8; 4:8) के रूप में दिखाया जाता है। जेम्स एफिर्ड ने सुझाव दिया है कि आयत 8 के शब्द मुख्यत: ''परमेश्वर के लिए यूहन्ना के पसंदीदा विवरण के विपरीत'' के रूप में दिए गए।[20] यदि ऐसा है तो पशु और प्रभु के विवरण के लिए इस्तेमाल की गई शब्दावली में इस महत्वपूर्ण अंतर पर ध्यान दें: आयत 8ख से पता चलता है कि पशु विनाश में *जाएगा*[21] परन्तु अंतत: प्रभु विजय में *आएगा*।

आयत 8 में मिलने वाले विवरण में स्वर्गदूत ने जो भी और करने के लिए बताना चाहा, उसने अध्याय 17 के पशु को अध्याय 13 वाले समुद्री पशु से जोड़ दिया (देखें आयतें 3, 12, 14)। यह करने के बाद वह अपनी विस्तृत व्याख्या आरंभ करने को तैयार था। ''उस बुद्धि के लिए जिस में ज्ञान है, यही अवसर है'' उसने इसकी शब्दों से भूमिका दी (आयत 9क)।[22] NIV में ''यह बुद्धि वाले मन की पुकार'' है। 13:18 में हमें ऐसी ही एक अभिव्यक्ति मिली है। इससे हमें पता चल जाता है कि आगे क्या महत्वपूर्ण पहेलियां हैं, ऐसे हल, जिन्हें केवल बुद्धिमान ही बता सकता है। (यह बात मुझे निर्णायक रूप से निर्बुद्धि होने का अहसास कराती है!)

हम धन्यवाद कर सकते हैं कि स्वर्गदूत की व्याख्या के पहले भाग को समझने के लिए

अधिक बुद्धि की आवश्यकता नहीं है: ''वे सातों सिर [अर्थात पशु के सातों सिर] सात पहाड़ हैं, जिन पर वह स्त्री बैठी है'' (आयत 9ख)। पहले हमने देखा था कि पशु के सात सिर सामान्य रूप में उसके अत्यधिक धूर्त और चालाक होने का संकेत थे। आयत 9ख में स्वर्गदूत ने सिरों का विशेष अर्थ बताया: ''सातों सिर सात पहाड़ हैं।'' पिछले पाठ में हमने निष्कर्ष निकाला था कि यूहन्ना के समय में वह स्त्री रोम था, जो ''सात पहाड़ों पर बसे नगर'' के रूप में विश्व प्रसिद्ध था।

यदि स्वर्गदूत यहीं छोड़ देता तो हमें यह समझने में थोड़ी कठिनाई होनी थी कि बड़ा बाबुल रोम नगर ही था और वह अपने निश्चित विनाश की ओर बढ़ रहा था। ''परन्तु,'' जैसा कि राबर्ट माउंस ने कहा है, ''अब साजिश गहरा जाती है।''[23] रुकने के बजाय स्वर्गदूत ने सात सिरों की अतिरिक्त व्याख्या दे डाली:

> और वे सात राजा भी हैं, पांच तो हो चुके हैं, और एक अभी है; और एक अब तक आया नहीं, और जब आएगा, तो कुछ समय तक उसका रहना भी अवश्य है। और जो पशु पहिले था, और अब नहीं, वह आप आठवां है; और उन सातों में से उत्पन्न हुआ, और विनाश में पड़ेगा (आयतें 10, 11)।

यह तथ्य कि सिरों को एक से अधिक अर्थ दिए गए हैं, हमें उलझाता नहीं है। सांकेतिक भाषा भी दृष्टिभ्रम की तरह हो सकती है, जो पहले एक चीज़ लगता है और फिर अलग दृष्टिकोण से देखने पर कुछ और नज़र आता है। हैनरी एलफोर्ड ने लिखा है कि स्त्री (रोम नगर) के सम्बन्ध में सिर वे पहाड़ थे, जिन पर वह बैठी थी; परन्तु पशु (रोमी साम्राज्य) के सम्बन्ध में वे राजा थे।[24]

आयत 10 को ''प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की सबसे विवादित आयतों में से एक'' कौन बनाता है[25]? आरम्भ करने के लिए, हम में से कई लोग आयत 11 की यह व्याख्या करने से डरते हैं कि पशु ''आप आठवां है और उन सातों में से एक है।'' पशु के सात सिर और उसके साथ ही एक सिर कैसे *हो* सकते हैं? (मन में इसकी तस्वीर बनाने की कोशिश करें।) ''सातों में से एक'' के सम्बन्ध में जे. डब्ल्यू. राबर्ट्स (मेरी नज़र में बेहतरीन यूनानी विद्वानों में से एक) ने कहा कि यह वाक्यांश ''यूनानी में कठिन है और सम्भवतया इसका अर्थ है 'वह सातों में से एक जैसा है।'''[26] माइकल विल्कोक को लगा कि इस भाग का अर्थ ''वैसा ही और'' है।[27] यदि ये विद्वान सही हैं तो भी इससे कठिनाइयां दूर नहीं हो जातीं।

''आठवां'' सिर कौन या क्या है, अभी भी अगले शब्दों की व्याख्या पर निर्भर करता है। इस आयत पर बड़ी बहस सात राजाओं (या क्या यह आठ है?) की पहचान पर है।

मनुष्यों का अनुमान (17:10-13)

विस्तृत शब्दावली के पांच राजा गिर गए, एक बना रहा, एक आने वाला था, के अलावा यह कि एक और था, से अधिकतर टीकाकारों को यह विश्वास हो गया है कि हमें *पहचानना* ज़रूरी है कि कौन (या क्या) गिरा था, कौन (या क्या) बना रहा, वगैरह, वगैरह।

पशु स्वयं कई विश्वव्यापी साम्राज्यों का मिश्रण था, जिस कारण हम यह मानते हैं कि इसमें विश्वव्यापी साम्राज्यों की सूची बनाने के लिए कहा गया है। सूचियां अलग-अलग

हैं, परन्तु नीचे दी गई सूची इस ढंग से काफी मिलती-जुलती है:

पांच गिर गए हैं:
1. मिस्र[28]
2. अश्शूर
3. बाबुल
4. मादा-फारस
5. यूनान

एक है:
6. रोम

एक आने वाला है:
7. कांस्टेंटाइन द्वारा रोमी साम्राज्य को ''मसीही'' बनाया गया (?)[29]

आठवां:
8. भविष्य की हर मसीही-विरोधी सरकार (?)

इस ढंग की एक कमज़ोरी यह है कि ''आने वाले'' और आठवें राज्य का ''जो सातों में से एक है'' अनुमान लगाना आवश्यक है।[30]

एक और प्रसिद्ध ढंग रोमी सम्राटों को सिरों के रूप में दिखाना है।[31] अफसोस कि प्रकाशितवाक्य लिखे जाने के समय सात से अधिक राजा पहले ही थे। किस राजा से आरम्भ किया जाए? किस राजा को सूची में रखा जाए और किसे निकाला जाए? इस शृंखला की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के परिचय में, पहले के हाकिमों सहित मैंने रोमी साम्राज्य के इतिहास का संक्षिप्त विवरण दिया था।[32] एक उद्देश्य अध्याय 17 की पृष्ठभूमि देना था। उस भाग को आगे बढ़ाने से पहले आप फिर से विचार कर सकते हैं।

फिर, इस ढंग में कई भिन्नताएं हैं, परन्तु नीचे दी गई सूची थोड़ी बहुत मेल खाती है:

पांच गिर गए हैं:
1. अगस्तुस (ओक्टेवियुस) (27 ई.पू [या 31]-14 ईस्वी)
2. तिबरियुस (14-37 ईस्वी)
3. गयुस कलिगुला (37-41 ईस्वी)
4. क्लौदियुस (41-54 ईस्वी)
5. नीरो (54-68 ईस्वी)

एक है:
6. विस्पेसियन (69-79 ईस्वी)

एक आने वाला है:
7. टाइटस (79-81 ईस्वी)

आठवां:
8. डोमिशियन (81-96 ईस्वी)

दी गई सूची में कुछ मज़बूत बातें हैं: वचन के अनुसार, सातवां केवल ''कुछ समय के लिए रहना'' था, और टाइटस ने केवल कुछ समय तक ही राज किया। हमने कहीं और इस बात पर ज़ोर दिया कि पशु केवल साम्राज्य को ही नहीं, बल्कि सम्राट को (अन्य शब्दों में, डोमिशियन को) कहा जा सकता था, इसलिए यह कहा गया होगा कि पशु ''सातों में से एक'' होने के बावजूद आठवां था (अन्य शब्दों में पिछले सात की तरह राजा)।

इस विशेष सूची की कमज़ोरियां भी हैं कि यह जान-बूझकर अगस्तुस से आरम्भ होती है[33] और 68-69 ईस्वी में एक-दूसरे के तुरन्त बाद सिंहासन पर बैठने वाले गलबा, ओथो और विटेलुयस को नज़रअंदाज़ करती है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि इस सूची से प्रकाशितवाक्य के वेस्पेसियन के समय लिखे होने का संकेत मिलता है,[35] बावजूद इस तथ्य के कि हमारे पास और कोई प्रमाण नहीं है कि यह पुस्तक उसके समय में लिखी गई, बल्कि अधिकतर प्रमाण डोमिशियन के समय लिखे होने का संकेत देता है।[36] हमारे पास यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि वेस्पेसियन के शासन में होने वाले सताव से यूहन्ना को पतमुस में जाना पड़ा या अन्तिपास को शहीद होना पड़ा (1:9; 2:13)।

माउंस ने लिखा है, ''परन्तु कोई सात राजाओं को रोमी सम्राटों के रूप में गिनने की कोशिश करता है तो उसके सामने कठिनाइयां आती हैं, जो पूरे ढंग पर काफी संदेह डालती हैं।''[37] चाहें तो आप स्वयं राजाओं की सूची वाला खेल खेल सकते हैं।[38]

सात/आठ सिरों की पहचान के लिए अन्य विचारों का प्रस्ताव दिया गया है,[39] परन्तु अभी के लिए हम 12 और 13 आयतों में चलेंगे। पशु के सिरों की विशेष व्याख्या देने के बाद स्वर्गदूत उस प्राणी के दस सींगों की ओर हो गया। सींग आमतौर पर सामर्थ का प्रतीक होते हैं, सो दस सींगों से यह संकेत मिला कि पशु में बड़ी सामर्थ थी। अब स्वर्गदूत ने पशु के ढांचे के इस गुण को अतिरिक्त महत्व दे दिया:

> और जो दस सींग तू ने देखे वे दस राजा हैं; जिन्होंने अब तक राज्य नहीं पाया; पर उस पशु के साथ घड़ी भर के लिए राजाओं का सा अधिकार पाएंगे।[40] ये सब एक मन होंगे, और वे अपनी-अपनी सामर्थ और अधिकार उस पशु को देंगे (आयतें 12, 13)।[41]

ये दस राजा सम्भवतया आयत 2 वाले ''पृथ्वी के राजा'' हैं, जिनसे बड़ी वेश्या ने कुकर्म किया था अर्थात वे उप-हाकिम, जिन्हें अपने ऊपर अधिकार नहीं था, परन्तु जिन्हें शासन करने का अधिकार रोम से मिला था।[42] वे रोम के पीछे खड़े थे, क्योंकि आर्थिक और राजनैतिक तौर पर यह उनके लाभ के लिए था।[43]

राजाओं की व्याख्या टीकाकार अलग-अलग करते हैं,[44] परन्तु अधिकतर इस बात से सहमत हैं कि ''दस'' की संख्या को अक्षरश: नहीं, बल्कि सांकेतिक[45] अर्थ में लिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए माउंस ने लिखा है, ''संख्या 10 सांकेतिक है और यह सम्पूर्णता का संकेत देती है। यह न तो दस विशिष्ट राजाओं, न रोमी साम्राज्य के नये सिरे से आने वाले दस यूरोपीय राजाओं की ओर इशारा करती है।''[46]

मैंने एक से एक विद्वानों को पढ़ा है, जो ज़ोर देते हैं कि दस की संख्या को अक्षरश: नहीं लिया जाना चाहिए। मुझे यह समझ नहीं आता कि ''फिर हमें उसी आयत में 'सात' के अंक को अक्षरश: लेना आवश्यक क्यों लगता है ? आखिर प्रकाशितवाक्य की लगभग हर बात किसी न किसी रूप से अंक सात को दर्शाती है।'' मैं इस बात से भी हैरान हुआ कि यूहन्ना के अधिकतर पाठकों को गत पचास वर्षों के हर कैसर की सूची की उम्मीद कैसे हो सकती थी। (अपने देश के पिछले पचास वर्षों के नेताओं पर सवाल पूछे जाएं तो *आपको* क्या लगेगा ?) यदि उन्हें उनका पता भी हो तौ भी उन्हें यह कैसे पता होगा कि सूची में किसे शामिल करना है और किसे निकालना है ?

शायद हमें विशिष्ट राजाओं (या साम्राज्यों) की पहचान की कोशिश करने की *आवश्यकता* नहीं। शायद संदेश आयत 8 जैसा ही था कि सिर बहुत से थे, परन्तु अब नहीं हैं (पहले से पांचवां सिर)। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं था कि पशु (मसीही-विरोधी सरकार) अब नहीं रही थी। यह अब भी थी (छठा सिर) और अन्त में अनन्त विनाश तक जाने तक रहनी थी (सातवां और आठवां)।

जो भी हो, यदि यूहन्ना के मन में विशिष्ट सम्राट (या साम्राज्य) थे तो हम साफ नहीं बता सकते कि वे कौन (या क्या) थे। साम्राज्यों बनाम सम्राटों के मामले में लियोन मौरिस ने लिखा है, ''कोई भी विचार सम्भव है, परन्तु शायद बेहतर विचार यह है कि हम संख्याओं को सांकेतिक रूप में लें।''[47] माउंस ने यह निष्कर्ष निकाला: ''सात राजाओं की शायद सबसे संतोषजनक व्याख्या यह है कि सात का अंक मुख्यतया पूर्ण ऐतिहासिक रूप में रोमी साम्राज्य की शक्ति का प्रतीक था।''[48]

स्वर्गीय प्रकाश (17:1, 8, 11, 14, 16)

यह सम्भव है कि अध्याय 17 को समझने के अपने संघर्षों में हमने गलत जगह पर अधिक ज़ोर दिया। इन आयतों की कठिनाइयों पर ध्यान लगाने के बजाय हमें चाहिए कि जो स्पष्ट और सही है, उसी पर ज़ोर दें। अध्याय 17 में बताई गई स्पष्ट शिक्षाओं में ये हैं: (1) बुराई आकर्षक दिखाई दे सकती है, परन्तु यह विनाश ही लाती है। (2) लग सकता है कि बुराई हमें अपने जाल में फंसा लेगी और हम इससे निकल नहीं सकते, परन्तु इसे भगाया जा सकता है। (3) बुराई आमतौर पर अभेद्य लगती है, परन्तु अन्तत: यह गिर जाएगी।

मेरा मानना है कि यह तीसरी शिक्षा इस वचन का मुख्य संदेश है। विषय वाक्य पर वापस आएं: ''मैं तुझे उस बड़ी वेश्या का दण्ड दिखाऊं'' (आयत 1)। अध्याय में वेश्या और पशु दोनों के न्याय पर ज़ोर दिया गया है। 8 और 11 आयतें यह पुष्टि करती हैं कि पशु ''विनाश के लिए'' जाएगा। यूनानी शब्द के अनुवाद ''विनाश'' का अर्थ ''बिल्कुल बर्बाद, तबाह'' है।[49] नये नियम में इस शब्द का इस्तेमाल बार-बार अनन्त विनाश की अन्तिम स्थिति के लिए किया गया है (मत्ती 7:13; फिलिप्पियों 1:28; 3:19; इब्रानियों 10:39; 2 पतरस 3:7)।

हो सकता है कि हम अध्याय 17 की कई बातों के बारे में पक्का कुछ न कह सकें, परन्तु हम इतना अवश्य जान सकते हैं कि अन्त में परमेश्वर बुराई को दण्ड देगा। मौरिस ने लिखा है

कि स्वर्गदूत ''हमें [पशु के सिरों की] पक्की पहचान बनाने के लिए इतना नहीं बताता।'' उसकी दिलचस्पी पशु के काम या उसकी शक्ति में नहीं है। यह इस बात में है कि वह *अपने विनाश की ओर जा रहा है।* सो अन्ततः हर बुराई का खात्मा होता है।[50]

अगले पाठ में हम मेमने को उन लोगों पर विजयी होते देखेंगे, जो उसका विरोध करते हैं (आयत 14)। हम पशु और उसके पीछे चलने वालों को बड़े बाबुल पर भड़कते देखते हैं: ''वे और पशु उस वेश्या से बैर रखेंगे, और उसे लाचार और नंगी कर देंगे; और उसका मांस खा जाएंगे और उसे आग में जला देंगे'' (आयत 16)। यह अध्याय *इसी* के बारे में है। हमें चाहिए कि पेड़ों को गिनने की कोशिश में समय न गंवाएं, ऐसा न हो कि हम जंगल में गुम हो जाएं!

सारांश

कहा गया है कि हमारे उद्धार के लिए सबसे आवश्यक सच्चाइयां वे हैं, जो वचन में सबसे स्पष्ट बताई गई हैं। अध्याय 17 की दस से 13 आयतों की जटिलताओं को हल करने के प्रयास में आपको मानसिक संतुष्टि मिले (या न), परन्तु मुझे नहीं लगता कि इससे आपके उद्धार को कोई अधिक फर्क पड़ता है। स्वर्ग में आप सात (या क्या यह आठ है?) सिरों की पहचान किए बिना तो जा सकते हैं, परन्तु आप इन सरल और स्पष्ट आज्ञाओं को माने बिना नहीं:

आपको पूरे मन से यीशु मसीह में विश्वास करना होगा (यूहन्ना 3:16; 8:24)।

आपको अपने पापों से मन फिराकर प्रभु की ओर लौटाना होगा (लूका 13:3; प्रेरितों 17:30)।

आपको अपना जीवन यीशु को देते हुए उसमें विश्वास का अंगीकार करना होगा (मत्ती 10:32; रोमियों 10:9, 10)।

आपको अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु में बपतिस्मा (डुबकी) लेना होगा (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; गलातियों 3:26, 27)।

आपको अपने समर्पण के अनुसार जीवन बिताना होगा (लूका 9:62; प्रकाशितवाक्य 2:10)।

मार्क क्वेट ने एक बार कहा था कि उसे बाइबल की वह बात परेशान नहीं करती, जिसकी उसे समझ नहीं थी; उसे वह बात परेशान करती थी जिसे वह समझता *था*। आप समझ *सकते हैं* कि मसीही कैसे बनना है, मसीही जीवन कैसे जीना है और मरने पर स्वर्ग में कैसे जाना है। यदि आप वह कर रहे हैं, जो प्रभु आपसे चाहता है कि आप करें तो आपको उसका ध्यान होना चाहिए।

जुडसोनिया की मण्डली के कई सदस्य महीने में दो बार रविवार की आराधना सेवा के लिए स्थानीय नर्सिंग होम में जाते हैं। वहां एक प्यारी बहन को अपना नाम भी पता नहीं है, उसके लिए अमेरिका के हों या रोम के, पुराने शासकों के नाम तो दूर की बात है, परन्तु उसे *यीशु* का नाम पता है, जिसे उसने कई साल पहले अपना जीवन दे दिया था। आपके

लिए *यह* जानना आवश्यक है। आपके लिए *यह* करना आवश्यक है।[51]

सिखाने वालों और प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ पर काम करते हुए मेरे ध्यान में एक छोटा सा कार्टून आया, जिसे पाठ के परिचय के लिए रेखाचित्र में आदमी को ''व्याख्या'' और ''अनुमान'' के कुण्ड में डूबते और ''प्रकाश'' के लिए ऊपर देखते हुए इस्तेमाल किया जा सकता है।

एक दृष्टिभ्रम जो पहले एक चीज़ लगता है और फिर कुछ अलग नज़र आता है, पाठ के प्वाइंट के सम्बन्ध में इस्तेमाल किया जा सकता है। कई मिल जाते हैं। आमतौर पर मिल जाने वाला एक यह है:

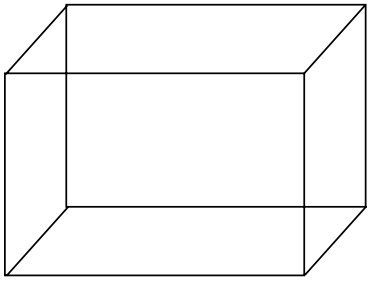

डिब्बे का कौन सा खाना सामने से खुलता है?

टिप्पणियां

[1]विलियम बार्कले, द *रैवलेशन ऑफ जॉन,* अंक 2, संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 134. [2]होमेर हेली, *रैवलेशन: एन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 349. [3]हेनरी बी. स्वेट, द *अपोकलिप्स ऑफ़ सेंट जॉन* (कैब्रिज: मैकमिलन कं., 1908; रीप्रिंट, गैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 220. [4]एडवर्ड ए. मैकडोवल, द *मीनिंग एंड मैसेज ऑफ़ द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 169. [5]कम्प्यूटर माहिरों द्वारा मुझे यह समझाने का एक उदाहरण ध्यान में आता है कि मेरा कम्प्यूटर किसी विशेष प्रकार से काम करेगा या क्यों नहीं करेगा। मुझे कम्प्यूटर की बहुत कम जानकारी है, जिस कारण उनकी बातें मेरे पल्ले नहीं पड़तीं। [6]हमने कहा था कि स्त्री उससे भी *बढ़कर* को दिखाती है। (पिछला पाठ देखें।) [7]मूल धर्मशास्त्र में मूलत: ''मैं बड़े अचम्भे से अचम्भित हुआ'' या ''मैं बड़े आश्चर्य से चकित था'' है। ''अचम्भा'' शब्द का दोहराव ज़ोर देने के लिए था। आज हम कह सकते हैं, ''मैं हक्का-बक्का रह गया था!'' KJV में ''admiration'' शब्द है, जिसका अर्थ बदल गया है। यूहन्ना ने स्त्री की ''सराहना'' इस अर्थ में *नहीं* की, जिस अर्थ में आज हम इस शब्द का इस्तेमाल करते हैं। NKJV में ''I marveled with great *amazement*'' है। [8]मुझे न्यू यार्क सिटी, पहली बार देखकर डाउनटाउन सिडनी, ऑस्ट्रेलिया को देखकर बहुत हैरानी हुई थी। यूहन्ना और कारणों से हैरान हुआ होगा। [9]''भेद'' वह सच्चाई है, जिसकी पहले समझ नहीं थी, परन्तु अब प्रकट की गई है। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''बड़े संदेश वाली छोटी किताब'' में 10:7 पर नोट्स देखें। [10]कई लोग ''नहीं है'' वाक्यांश को (8 और 11 आयतों में) यह संकेत देने के लिए लेते हैं कि यूहन्ना द्वारा लिखने के समय पशु था ही नहीं। प्रमाण की रोशनी में यह इसके विपरीत लगता है: अध्याय 13 वाले पशु की चर्चा, यह तथ्य कि स्त्री पशु पर बैठी थी और यह तथ्य कि पशु का सिर था जिसका अस्तित्व था (आयतें 9, 10)। *यदि* वाक्यांश ''नहीं है'' से कोई विशेष महत्व जोड़ना हो, तो वह यह हो सकता है कि यूहन्ना ने सताव के बावजूद संक्षिप्त काल के दौरान लिखा। यदि इस वाक्यांश का अर्थ यह है तो यूहन्ना ने मसीही लोगों को बताना चाहा होगा कि सताव खत्म नहीं हुआ होगा बल्कि इससे भी बुरा आने वाला था।

[11]प्रकाशितवाक्य में ''अथाह कुण्ड'' का इस्तेमाल दुष्ट आत्माओं के निवास के लिए किया गया है। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''पाप का स्व-विनाशकारी स्वभाव'' में 9:2 पर नोट्स देखें।) यह नरक (यू.: *गेहन्ना*) के लिए नहीं है। [12]''पृथ्वी के रहने वाले'' अविश्वासियों को कहा गया है न कि मसीही लोगों को। [13]''जगत की उत्पत्ति के समय से'' वाक्यांश परमेश्वर की सनातन मंशा पर ज़ोर देता है; यह किसी व्यक्ति विशेष के पहले से चुने जाने या विश्वास से फिर जाने की असम्भावना को नहीं सिखाता। (इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''देखो, सुनो और समझो'' में 13:8 पर नोट्स देखें।) प्रभु ने जीवन की पुस्तक से किसी का नाम हटाए जाने की सम्भावना का संकेत पहले से दे दिया (3:5)। जी. बी. केयर्ड ने सुझाव दिया कि ''सावधानी पूर्वक बनाए गए कथनों में यूहन्ना की कोई दिलचस्पी नहीं थी, जिनमें यह दिखाया गया था कि पहले से ठहराए जाना और स्वेच्छा का आपस में सम्बन्ध है; [वह] केवल दो विश्वासों को एक दूसरे के पास-पास रखकर बिना योग्यता के एक को दूसरे को योग्य बनाने की अनुमति देता है'' (*ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन द डिवाइन* [लंदन: एडम एंड चार्ल्स ब्लैक, 1966], 168)। [15]इस पुस्तक के आरम्भ में पाठ ''देखो, सुनो और समझो'' देखें। [16]पहले पशु का वर्णन ''अथाह कुण्ड से निकलकर आने वाले पशु'' (11:7) के रूप में किया गया था। मूल धर्मशास्त्र में, यह संकेत देते हुए कि पशु अथाह कुण्ड में से *निरन्तर* आता है, मूल शास्त्र में ''आता है'' वर्तमानकाल में है। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पाठ ''क्या आप मरने को तैयार है'' में 11:7 पर नोट्स देखें। [17]''पंख'' रंगमंच का शब्द है, जिसमें परदे के पीछे मंच के दोनों ओर का क्षेत्र होता है। [18]मैं फिर से ज़ोर देता हूं कि यूहन्ना ने उसे दंतकथा का इस्तेमाल किया या नहीं यह किसी भी प्रकार से यह संकेत नहीं है कि वह इसे मानता था। [19]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 59 और 60 पर फ्लेवियुस के राज घराने पर जानकारी

देखें। [20]जेम्स एम. एफर्ड, *रैवलेशन फ़ॉर टुडे* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1989), 103.

[21]पशु के विनाश में जाने का विवरण अध्याय 19 के अन्त के निकट दिया जाएगा। [22]''दिमाग बोध और समझ की सुविधाओं से मिलकर बना है, जो बुद्धि के साथ मिलने पर (वस्तुओं अर्थ पता लगाने की योग्यता), यूहन्ना के प्रकाशन की गहन समझ देता है'' (हेली, 350)। [23]राबर्ट माउंस, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 314. [24]हेनरी अल्फोर्ड, *अल्फोर्ड'स ग्रीक टैस्टामेंट: एन एक्सेजेटिक्ल एंड क्रिटिकल कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: गार्डियन प्रैस, 1976), 710. [25]जॉर्ज एल्डन लैड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 228. [26]जे. डब्ल्यू. राबर्ट्स, *द रैवलेशन टू जॉन (द अपोकलिप्स),* द लिविंग वर्ल्ड कमैंट्री सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974), 141. [27]माइकल विल्कोक, *आई सॉ हैवन ओपन्ड: द मैसेज ऑफ रैवलेशन,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1975), 164. [28]कई लोग यहां ''पुराना बाबुल'' को बदल देते हैं (नबूकदनेस्सर के ''नया बाबुल'' का उलट)। [29]हज़ार वर्ष के राज्य (प्रीमिलेनियलिज़्म)की शिक्षा देने वाले लोग आमतौर पर ''रोमी साम्राज्य की बहाली'' (या कुछ ऐसा) शब्द इस्तेमाल करते हैं, जो भविष्य में होने वाला है। ऐसी अवधारण है, जिसकी शिक्षा बाइबल नहीं देती। [30]एक और कमज़ोरी है कि सातवें और आठवें साम्राज्यों की पहचान करने की कोशिश का परिणाम इस तथ्य के बावजूद कि दानिय्येल 2:44 संकेत देता है कि परमेश्वर के राज्य की स्थापना के बाद (जो मसीह के जी उठने बाद आने वाले पहले पिन्तेकुस्त पर कलीसिया की स्थापना पर हुआ), कोई विश्वव्यापी मानवीय साम्राज्य नहीं होगा।

[31]''राजाओं'' शब्द (आयत 10) रोमी सम्राटों के लिए सामान्य नाम था (उदाहरण के लिए देखें 1 पतरस 2:17)। [32]यह *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 56 से 61 तक में मिलता है। [33]विद्वान इस पर बहस करते हैं कि कैसर हाकिम था भी या नहीं। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 56 में देखें। [34]कुछ प्राचीन लेखक उन्हें सचमुच सम्राट लिखते हैं, जबकि कई उन्हें बलपूर्वक काम कराने वाले और ढोंगी मानते हैं। [35]कई लेखक इस तथ्य के बावजूद कि इस अनुमान के समर्थन में कोई सबूत नहीं हैं यह दावा करते हुए कि प्रकाशितवाक्य का यह भाग वेस्पेसियन में समय में लिखा गया और डोमिशियन के समय में पुस्तक में इकट्ठा किया गया, इस समस्या में उलझे रहते हैं। अन्य इस समस्या पर एक अलग जगह सूची बनाना आरम्भ करके काम करते हैं, जिससे वेस्पेसियन 6 अंक न लगे, परन्तु इससे सुलझाने के बजाय और समस्याएं हो जाती हैं। निश्चय ही कइयों का मानना है कि प्रकाशितवाक्य पूरी की पूरी वेस्पेसियन के समय में लिखी गई; परन्तु जैसा कि पाठ में बताया गया है कि इससे भी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। [36]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''प्रकाशितवाक्य की सात बातें जो आपको पता होनी चाहिए'' देखें। [37]माउंस, 315. [38]खेल के आवश्यक टुकड़े (अर्थात जानकारी) *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''महत्वपूर्ण चिह्न और चकित करने वाले संकेत'' में मिलती है। [39]एक और ढंग सिरों को प्रबन्ध के अलग-अलग रूपों के रूप में चिपकाना है। [40]''एक घड़ी'' तुलनात्मक रूप से शीघ्र बीत जाने वाली समय की छोटी अवधि का संकेत हैं। यह वाक्यांश अध्याय 18 में तीन बार मिलेगा। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पृष्ठ 52 पर ''एक'' के सांकेतिक महत्व पर नोट्स देखें।

[41]आयत 12 की तुलना दानिय्येल 7:7, 20, 24 से करें। [42]यदि ऐसा है तो ये रोमी साम्राज्य के प्रांतीय हाकिम और राजा होंगे। (इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''महत्वपूर्ण चिह्न और चकित करने वाले संकेत'' में 17:2 पर नोट्स देखें।) [43]इस तथ्य के बारे में कि उनका प्रभाव रोम को दिया गया था, आयत 17 देखें। एक लेखक ने ''मसीही लोगों के सताव में स्थानीय अधिकारियों तथा हाकिमों की भूमिका'' कहा (राबर्ट्स, 143)। [44]कई लोग इन आयतों को ''नीरो रैडिविवुस'' मिथ्या से जोड़ते हैं और दस राजाओं को पारथी हाकिमों के रूप में पहचनाते हैं। वचन ''*अभी* राज्य नहीं मिला'' कहता है, जिसका कई लोग यह विश्वास करते हैं कि ये भविष्य, अनाम हाकिमों को दिखाते हैं, जो मसीहियत से अनजान होने थे (और इस कारण उन्होंने अपनी शक्ति और अधिकार पशु को दे देने थे)। परन्तु इसे यूहन्ना के समय में मूल व्याख्या रखना बेहतर लगता है। [45]कुछ एक ''दस'' का अंक अक्षरश: लेते हैं। कई यह सोचते हैं कि यह पहले दिए गए सात

राजाओं के अलावा तीन और (हो सकता है कि वे 68-69 ईस्वी वाले तीन ''बलपूर्वक अधिकार करने वाले'' हों) इस तथ्य के बावजूद कि वचन कहता है कि दस राजाओं के पास अपना कोई अधिकार नहीं था।[46]माउंस, 317. हजार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले इस आयत को अक्षरश: लेने और भविष्य के ''दस राज्यों के संगठन'' की बात करते हैं। जो कई बार यूरोपीय साझा बाज़ार का हवाला होता है। यह व्याख्या पहली शताब्दी के पाठकों के लिए इस भाग को और अस्पष्ट और बेचैन कर देती है।[47]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 204. [48]माउंस, 315. [49]हेली, 350. [50]मौरिस, 205.

[51]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करते हैं तो अपने सुनने वालों को जितनी जल्दी हो सके प्रभु की आज्ञा मानने को प्रोत्साहित करें।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. 17:1 में मिलने वाले विषय कथन पर विचार और चर्चा करें।
2. आपको क्या लगता है कि यूहन्ना बड़ी वेश्या पर क्यों चकित हुआ?
3. यूहन्ना के स्त्री पर चकित होने के बाद, आपको क्या लगता है कि स्वर्गदूत ने स्त्री *और* पशु पर चर्चा क्यों की? आपको क्या लगता है कि स्वर्गदूत ने पहले पशु की चर्चा क्यों की?
4. ''था, और अब नहीं है, और आने वाला है'' वाक्यांश के सम्भावित अर्थ क्या हैं?
5. 17:8 में पशु के विवरण के लिए इस्तेमाल शब्दों की तुलना 1:4 में प्रभु के विवरण के लिए किए गए शब्दों से करें। ये विवरणात्मक शब्द कैसे मिलते-जुलते हैं? उनमें अन्तर कैसे है?
6. सात पहाड़ों पर बैठी स्त्री के विवरण का संभावित अर्थ क्या है?
7. आयत 10 साम्राज्यों की किन कुछ शक्तियों और कमज़ोरियों की बात करती है?
8. आयत 10 सम्राटों की किन कुछ शक्तियों और कमज़ोरियों की बात करती है?
9. दस राजाओं के कुछ सम्भावित अर्थ क्या हैं?
10. ''सात'' अंक का सांकेतिक अर्थ क्या है? यदि आयत 10 के अंक ''सात'' का अर्थ अंक के बजाय सांकेतिक समझा जाए तो इस आयत में क्या शिक्षा हो सकती है?
11. अध्याय 17 से हम क्या सबक ले सकते हैं? इस प्रस्तुति में किए गए अध्ययन के भाग का *मुख्य* संदेश क्या है?
12. यदि हम आयत 10 से 13 की जटिलताओं को नहीं समझ पाते तो इससे हमारे उद्धार पर क्या असर होगा? हमारे उद्धार पर किससे असर *होगा*?